ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):378-382

मीराबाई की भक्ति भावना

प्रियंका शुक्ला एवं ममता मिश्रा
हिन्दी विभाग, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
जमुनीपुर ,दुबावल , प्रयागराज

Received: 28.10.2025 *Revised: 29.11.2025* *Accepted: 15.12.2025*

शोध सार

भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज' धातु से 'क्तिन' प्रत्यय लगने से होती है, जिसका अर्थ है - सेवा भजन अर्पण पूजा तथा प्रीति आदि. भक्ति में प्रेम तत्व की प्रधानता होती है, और भक्ति का आनंद और अनिर्वचनीय, अकथनीय होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल भी श्रद्धा और प्रेम को भक्ति मानते हैं। "श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।" जब अपने ईष्ट के दर्शन, श्रवण कीर्तन, ध्यान, आदि में आनंद का अनुभव होने लगे मन इष्ट में रम जाए तब भक्ति रस का संचार समझना चाहिए। हिंदी साहित्य में भक्ति की धारा कुछ देर से प्रभावित हुई। भक्ति का आरंभ तो उत्तरी भारत में हुआ किंतु सर्वप्रथम दक्षिणी भारत के आलवारो व आचार्यो के यहां पहले लक्षित हुआ। भक्ति काल में भक्ति धारा दो रूपों में दिखाई पड़ती है: निर्गुण भक्ति धारा और सगुण भक्ति धारा। निर्गुण भक्ति अनंत ब्रह्म में विश्वास रखते हैं और सगुण भक्त अवतारवाद को मानते थे। यह दोनों धाराएं पुनः दो उपशाखाओ में विभक्त हो गई । निर्गुण धारा प्रेम मार्गी तथा ज्ञानमार्गी दो धाराओं में विभक्त हो गई तो सगुण धारा राम भक्ति तथा कृष्ण भक्ति शाखा में व्यक्त हुई। मध्यकाल के भक्ति मार्ग में ऐकांतिक भक्ति का स्वर प्रमुख था।

बीज शब्द -:*भक्ति, भक्ति भावना, पुष्टिमार्ग, नवधा भक्ति, सगुण उपासना*

आलेख:

यद्यपि श्रीमद् भागवत एवं महाभारत में श्री कृष्ण का चरित्र इतना व्यापक और महान है कि वह महाकाव्य का विषय हो सकता है लेकिन कृष्ण भक्त कवियों ने उनके मधुर रूप को ही अपनी भक्ति के लिए चुना जो शील और सौंदर्य से परिपूर्ण है । उन्होंने कृष्ण के दानव दलन, कंस निकंदन रूप को न अपनाकर यशोदा नंदन गोपी वल्लभ मुरली मनोहर और रास बिहारी रूप को चुना। भक्ति की तरंग में इन कवियों ने लोक-लाज, कुल की मर्यादा के सभी बंधनों को तोड़ दिया ।

मीरा गिरधर गोपाल की अनन्य प्रेमिका थी, उन पर समकालीन कृष्ण भक्त कवियों का प्रभाव भी अवश्य पड़ा, लेकिन उन्होंने किसी संप्रदाय विशेष में ना तो दीक्षा ही ली और ना ही किसी पद्धति विशेष को ही अपनाया, उनका व्यक्तित्व या कृष्ण परायण जीवन ही उनके पदों में प्रतिविम्बित हुआ है। नारी हृदय की कोमलता, सरसता , तल्लीनता , और मादकता ही उनकी वाणी से व्यक्त हुई है। मीरा कृष्ण प्रेम में मतवाली थी मुरली की मधुर धुन ने उसे उसी प्रकार उन्मत्त बना दिया जिस प्रकार राधा को। मीरा ने राधा की भक्ति भावना ग्रहण कर अपने को पूर्णतः कृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया। इसी आत्म समर्पण तीब्र भावुकता और तल्लीनता के कारण ही मीरा की कविता सरस और मर्मस्पर्शी बन पड़ी है। साथ ही संगीत के गुणों ने सोने पर सुहागा का काम किया है। [१]

डॉक्टर भुवनेश्वर नाथ मिश्रा के शब्दों में- कांता भाव की जीवित मूर्ति है - मीरा। इस भाव में ही सभी भाव निहित हैं, प्रेम की पराकाष्ठा कांता भाव में ही होती है। पत्नी पति के संपूर्ण प्रेम की अधिकारिणी हैं। उससे उसकी कोई लाज नहीं ,कोई दुराव छिपाव नहीं। पत्नी पति के प्यार स्नेहादि की भी अधिकारिणी है , सेवा की भी। पति पत्नी का सखा भी है ,स्वामी भी है प्रेमी भी है और प्राणनाथ भी है। इसी हेतु इस परम भाव में सभी भावों का रसायन तैयार हुआ है। मीरा ने भी गोपियों के सामान सब कुछ छोड़कर गिरधर गोपाल को कंत बनाया, यही कांता भाव है।

सावरे के रंग में रंगी मीरा के हृदय की व्याकुलता ही वास्तव में उसके पदों में व्यक्त हुई है। मीरा की प्रीत जन्म-जन्मान्तरो की थी। यह भक्ति केवल यौवन जनित काम-भावना का ही उदात्त रूप नहीं बल्कि बालापन की मिताई है। सभी भौतिक सुखों को त्याग कर मीरा ने एकमात्र कृष्ण का वरण किया था। कृष्ण ही उसका सर्वस्व उसकी गति और मति थी। कृष्ण साधन है, कृष्ण ही साध्य है। कृष्ण के अतिरिक्त वो किसी को अपना नहीं मानती।

" म्हारो तो गिरधर गोपाल दूसरो ना कोई।
सांध्या ढिंग बैठि- बैठि लोक लाज खोई।।" [२]

कृष्ण को ही वह एकमात्र पूर्ण पुरुष ही समझती थी, इसीलिए वह स्पष्ट शब्दों में घोषित करती है- "मीरा हरि के हाथ बिकानी"। मीरा की भक्ति प्रेम झूला है, माधुर्य भाव से परिपूर्ण। माधुर्य भक्ति में प्रियतम की रूप माधुरी का वर्णन मिलन की कामना, विरह की तीव्रता, तन्मयता , सांसारिक आकर्षणों का त्याग, और आत्मसमर्पण इत्यादि का वर्णन आवश्यक होता है। यद्यपि मीरा ने किसी सिद्धांत में बंधना नहीं चाहा, फिर भी उसके काव्य में सहज रूप से ही इन विशेषताओं का वर्णन मिल जाता है। मीरा अपने सांवरे सलोने कृष्ण के रंग में रंगी है तो भला वह उनके मोहक रूप का वर्णन कैसे न करती-

"बस्याँ म्हारे नैणण मां नन्दलाल मोर मुकुट मकराकृत कुंडल-------[३]

मीराबाई की भक्ति भावना दाम्पत्य भाव पर आधारित है। कृष्ण उनके पति हैं, वह उनकी पत्नी

और प्रेयसी। अतः कृष्ण से मिलन की इच्छा स्वाभाविक है। मीरा कृष्ण से मिलने के लिए श्रंगार करती हैं, चौक पूरती हैं, कलियां चुन-चुन कर सेज बिछाती है , कृष्ण से मिलन की परम आकांक्षा है उन्हें। मीरा की भक्ति में प्रेम है, समर्पण है जो उनके पदों में संपूर्ण आवेग के साथ उच्छवसित हुआ है। अपने इष्ट के दर्शन की तीव्र लालसा, मिलन की परिपूर्ण तृष्णा किसी अन्य कवयित्री में नहीं पाई गई। मीरा की भक्ति में माधुर्य भावना के सभी आवश्यक तत्व विद्यमान हैं। वास्तविकता यही है कि अपने जीवन और हृदय के समस्त माधुर्य को उन्होंने कृष्णार्पण किया है। माधुर्य भावना के साथ-साथ मीरा की भक्ति में नवधा भक्ति की विशेषताएं भी देखी जा सकती हैं-

भागवत के अनुसार श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पूजन, इष्ट देव का सेवन, दास्य, सख्य, दर्शन, और आत्म निवेदन इत्यादि नवधा भक्ति के अंग माने जाते है । मीरा के पदों में सहज रूप से तथा संयोजन से ही इन तत्वों का समावेश पाया जाता है । **१: श्रवण:** भगवान की महिमा का उनके लोकोद्वारक रूप का वर्णन सुनना तथा प्रभु की लीलाओं को सुनना भागवत धर्म का एक अंग हैं। प्रभु के गुणों को श्रवण करने से श्रोता की निष्ठा दृढ होती है; भक्ति का अंकुर विकसित होने लगता है। मीरा ने भी कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का श्रवण किया।

२: कीर्तन: कीर्तन मीरा की भक्ति का प्रमुख अंग है। वह कृष्ण के प्रेम में दीवानी साधु संतों की संगति में गाती है, नाचती है, कीर्तन आदि करती है।

३: स्मरण: मीरा निरंतर कृष्ण के गुणों का स्मरण करती है।

४: वंदन: वंदना भगवान के प्रति सर्वोच्च श्रद्धा या प्रार्थना है। मीरा भी श्री कृष्ण के प्रति सर्वोच्च श्रद्धा रखती है।

५ : पाद सेवन: मीरा श्रीकृष्ण के चरणों में स्वयं को समर्पित करती है।

६: दर्शन: मिलन की लालसा ,विरह विदग्धा, मीरा अपने प्रियतम से मिलने की अनेक कल्पनाएं करती है।

७: दास्य भाव: मीरा के पदों में दास्य भाव की भी झलक मिल जाती है।

८: सख्य भाव: यद्यपि मीरा ने अपने प्रियतम को पति के रूप में वरण किया है। वह उन्हें जन्म-जन्म का साथी मानती है।

९ : आत्म निवेदन: भक्ति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है- आत्म निवेदन और मीरा का काव्य वास्तव में आत्म निवेदन और सर्वस्व समर्पण का काव्य है।

मीरा सगुण कृष्ण की उपासिका है, उनकी भक्ति माधुर्य भाव की है, उन्होंने पूरी तन्मयता से गोपी भाव को आत्मसात किया था। भक्ति काल में कांता भाव की भक्ति की विशेष प्रतिष्ठा थी। कबीर जैसे अक्खड़ संत भी इस भाव से अभिभूत थे। एक युवती जिस तरह से अपने पति के प्रति पूर्ण समर्पण एवं राग रखती है उस तरह का समर्पण भाव अन्य प्रकार के रागात्मक संबंधों में परिलक्षित नहीं होता। मीरा गोपी भाव से जिस प्रकार नट नागर गोपाल का वरण करती है; वह

रूपवान तो है ही रति ऊर्जा का स्रोत भी है।

मीरा राजसी परिवार में पली- बढ़ी थी, सांसारिक पतियों की सामान्य मृत्यु के अलावा उनके अनुभव क्षेत्र में ऐसे पति थे जो युद्ध करते हुए असमय ही काल –कवलित हो जाते थे। मीरा के कोमल हृदय पर युद्धरत राजपूतो के सिर पर मंडराने वाली मृत्यु की विशिष्ट प्रतिक्रिया थी। उनके अपने पति का भी असमय में देहावसान हो गया था। अतः मीरा अविनाशी पति का वरण करने के लिए संकल्पबद्ध थी। वह कहती है**, "मीरा के प्रभु हरि अविनाशी चेरी भई बिन मोल"।**

मीरा जन्म –जन्म से कृष्ण के चरणों की दासी रही है , अतः उनकी प्रीति अतिशय पुरातन है। मीरा की भाव चेतना में स्वकीया- परकीया का द्वंद्व दिखाई देता है। भक्त और भगवान के अद्वैत एवं द्वैत एवं भाव की मनः स्थिति जिस तरह संतो में दृष्टिगत होती है उसका हल्का- हल्का आभास मीरा में भी है। मीरा की मधुरा भक्ति में प्रेयसी और परिणीता भावो का अदभुत सामंजस्य है। वह कृष्ण के चरणों की सेविका है।

नारद भक्ति सूत्र उल्लिखित ग्यारह आसक्तियों के चित्र मीरा में उपलब्ध होते हैं। मेरा ने शास्त्र का अध्ययन करके फिर तदनुकूल अपने भावों को सचेष्ट रचा होगा। ऐसा अनुमान करना उचित नहीं है, लेकिन भक्ति भाव की अभिव्यक्ति के जितने माध्यम अथवा तरीके थे उनको उन्होंने अपने समकालीन भक्तो से अवश्य जाना समझा था । [४]

"मीरा में भक्ति के संस्कार बाल्यकाल में गहरे और मजबूत हो गए थे। इस संबंध में कई जनश्रुतियां मिलती हैं। एक जनश्रुति के अनुसार एक बारात में सजे धजे वर को देखकर बालिका मीरा बहुत प्रभावित हुई थी। उसने स्वाभाविक जिज्ञासा वश अपनी दादी या माँ से पूछा, " मेरा वर कौन हैं?' उसकी जिज्ञासा पर तत्काल यही उत्तर दिया गया, "तुम्हारे वर भगवान कृष्ण है"। बालिका मीरा के मन में यह बात जम गई और उसने धीरे-धीरे भगवान कृष्ण को अपना वर मान लिया। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार: एक साधु के पास एक छोटी कृष्ण प्रतिमा देखकर मीरा उसको लेने के लिए मचल गई , साधु ने मीरा को मूर्ति नहीं दी और वहां से चला गया। मीरा ने मूर्ति लेने की जिद पकड़ ली उसने खाना पीना छोड़ दिया, बाद में स्वयं भगवान कृष्ण ने स्वप्न में साधु को आदेश दिया कि वह मूर्ति मीरा को दे दे, तदनुसार साधु ने मूर्ति मीरा को दी और उसने तभी से कृष्ण को अपना वर और आराध्य मान लिया [५]

भक्तिमती मीराबाई सगुणोंपासिका वैष्णव भक्त के रूप में अद्यावधि विख्यात है। श्री विष्णु के दो अवतारों [रामावतार, कृष्णावतार] के आधार पर भारत में जो दो भक्ति धाराएं चली उनमें से कृष्ण को आराध्य देव मानकर अपनी भक्तानुभूति को अभिव्यक्ति देने वाले भक्तों में मीरा का प्रमुख स्थान है । मीराबाई ने कृष्ण को अपने प्रियतम , पति के रूप में स्मरण आराधना उपासना किया है , अतः मीरा की भक्ति कृष्ण के प्रति माधुर्य भाव की भक्ति कहीं जा सकती है। [६]

मीराबाई की उपासना माधुर्य भाव की थी, अर्थात वे अपने इष्ट देव श्रीकृष्ण की भावना प्रियतम या पति के रूप में करती थी। पहले यह कहा जा चुका है कि इस भाव की उपासना में रहस्य का समावेश अनिवार्य है। इसी ढंग की उपासना का प्रचार सूफी भी कर रहे थे , अतः उनका संस्कार भी इन पर अवश्य कुछ पड़ा। जब लोग इन्हें खुले मैदान मंदिरों में पुरुषों के सामने जाने से मना करते थे तब वे कहती थी, " श्री कृष्ण के अतिरिक्त और पुरुष है कौन जिसके सामने लज्जा करूं"।

मीराबाई का नाम भारत के प्रधान भक्तों में है, और इनका गुणगान नाभा जी, ध्रुवदास, व्यास जी, और मलूकदास आदि सब भक्तो पर सब में प्रेम की तल्लीनता सामान रूप से पाई जाती है। [७]

निष्कर्ष: उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य के इतिहास में मीराबाई का सर्वोच्च स्थान है। उन्होंने अपने साहित्य में कृष्ण भक्ति की धरा को चित्रित किया है। उनकी भक्ति में आत्म समर्पण की भावना परिलक्षित होती है। उन्होंने अपने परम प्रिय प्रियतम श्री कृष्ण पर सब कुछ निछावर किया है , वह कृष्ण की प्रेम दीवानी थी, उनकी भक्ति में नवधा भक्ति के सभी अंग उपलब्ध होते हैं जिन भक्त कवियों ने भक्ति काल को स्वर्ण काल बनाने में योगदान दिया उनमे मीराबाई का प्रमुख स्थान है। मीराबाई ने कृष्ण भक्ति में भजन और कीर्तन को महत्वपूर्ण माना, उनके पद जो आज भी गाए जाते है , उनकी भक्ति भावना को व्यक्त करते हैं। मीराबाई को आज भी भारत में एक आदर्श भक्त के रूप में पूजा जाता है। अंतत हम यही कह सकते हैं कि मीरा की भक्ति असीम की ससीम से मिलने की आकुल पुकार है। उस परम ब्रह्म से मिलने की तीव्र उत्कंठा है।

संदर्भ सूची:-

१: मीराबाई की पदावली- परशुराम चतुर्वेदी- पृष्ठ 22 - कला मंदिर नई सड़क दिल्ली २ : मीराबाई की पदावली- पद 18

३: मीराबाई की पदावली - पद 3

४ : मीराबाई की संपूर्ण पदावली - राम किशोर शर्मा ,सुजीत शर्मा -पृष्ठ 32- 33 –लोकभारती प्रकाशन

५ : पांच रंग चोला पहर सखी री- माधव हाडा पृष्ट – 23- वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली

६ : मीरा ग्रंथावली भाग 1- प्रोफेसर कल्याण सिंह शेखावत- पृष्ठ 104 वाणी प्रकाशन

७ : हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल- पृष्ठ 124 - श्यामा प्रकाशन संस्थान दारागंज

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.